मासिक

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

सम्पादक

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष १	जनवरी. १९७५	संख्या १०

शब्द

साधन की प्रभुताई, मन साधे साध कहाई ॥ टे ॥
मन साधे तो सब सधे बिन साधे नहिं साध ।
साध कहावन कठिन है, साध का मता अगाध ॥
आंख कान मुख बन्द कर, सुन अनहद धुन तान ।
तीन बन्द जब घट लगे, तब प्रगटे सतज्ञान ॥
जो साधन सम्पन्न नहीं, नहीं अनुभव सम्पन्न ।
बिन अनुभव सम्पन्नता, नहीं सतगुरु परसन्न ॥
साधन की सम्पन्नता, हो अनुभव सम्पन्न ।
जो अनुभब सम्पन्न है, सो सतगुरु प्रसन्न ॥
राधास्वामी दीन हित, दीना नाथदयाल ।
दया रूप धर कह गए, बानी सरस रसाल ।
साधन की प्रभुताई, मन साधे साध कहाई ॥

सम्पादकीय--

'मन की चञ्चलता'

सबसे पहले तो बहुत कम जीवों को इस बात का ज्ञान है कि मन की चंचलता क्या है। संसार के सर्व साधारण जीवों को यह भी ज्ञात नहीं है कि मन क्या वस्तु है। मन की चञ्चलता का ज्ञान तो केवल साधक और अभ्यासी जीवों को है। क्योंकि मन की चंचलता इनके साधन में बाधक बन जाती है और रुकावट डालती है। अभ्यासी को आगे बढने का अवसर नहीं देती। उन्नति रुक जाती है। अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। यहां तक कि कई साधक इसके कारण निराश हो जाते हैं और अभ्यास छोड़ बैठते हैं। ऐसे अभ्यासियों की सहायता के लिए यह लेख लिखा जा रहा है। मुझे भी मन की चंचलता किसी समय बहुत ही तंग करती है।

पहली बात जो समझ लेनी चाहिए। मन का चंचल होना, मन का स्वभाव है। अतः घबराना बिल्कुल नहीं चाहिए।

मन के इस स्वभाव को बदलना निसन्देह बहुत कठिन काम है। आध्यात्मिकता तो बहुत दूर की बात है। जब मन को एक विषय पर एकत्र किया जाता है तो उस संकल्प को छोड़ कर कोई अन्य संकल्प विकल्प का उठना मन की चंचलता है। मैं सतसंग में बैठा ध्यान से बचन सुन रहा हूं परन्तु मेरे मन में एकाएक विचार आ गया कि अमुक पत्र का उत्तर मैंने नहीं दिया इत्यादि २। मेरा मन भटक गया। राह से बेराह हो गया। सत्संग का रस जाता रहा। इस विचार को दूर करने के लिए और सत्संग को ध्यान से सुनना जारी रखने के लिए शक्ति और धीरज की आवश्यता है। प्रत्येक साधक मन के हाथों तंग हो चुका है। बल्कि यह कहना सच है कि सन्त और महात्मा भी इससे बरी नहीं हैं।

मन के मते न चलिये. मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार हैं. वह साधू कोई एक॥

मन पर सवारी करना किसी किसी साधू का काम है। ऐसे साधू बहुत कम मिलेंगे। अन्यथा यह कहा गया है।

मन के मारे बन गए, बन तज वस्ती मांहि।
कहैं कबीर क्या कीजिए, यह मन ठहरे नांहि।

परन्तु कबीर साहब ने तो मन की बावत यहाँ तक कह दिया :---

साधो यह मन है बड़ा जालिम, जिसको इससे काम पड़ा है, उसको है मालूम ॥

मन की उछल कूद और मन के संकल्प विकल्प, सन्देह तथा भ्रम इनसे निकलना साधक के लिए कठिन काम है। इसलिए कबीर साहब ने मन को जालम कह दिया क्या यह जालम नहीं है कि मन सूरत को टिकने नहीं देता। सुरत को एक केन्द्र पर ठहरने नहीं देता। यह मन जीव को भरमाये रहता है। अपने चक्कर से निकलने नहीं देता। साधक पर अत्याचार करता है और अपने जाल में जीव को फंसाए रखता है। इसलिए कबीर साहिब ने आगे कह दिया है।

मन को मारूं पटक कर, टूक टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोयकर, लुनता क्यों पछिताय ॥

कबीर साहब ने मन के विरुद्ध कितना कह दिया। मन को मैं टुकड़े २ कर दूं। टुकड़े करके

इसको फेंक दूं । पहले तो बुरे २ विचार ग्रहण कर लेता है । जब इन विचारों की प्रतिक्रिया होता है तो फिर पछताता है । आनन्द लेना मनका काम है । आनन्द से यह मन भर जाता है । बाद में सचेत होने पर पश्चाताप करता है ।

जीव के चिदाकाश पर जो संस्कार पड़ते हैं । देखने से, पढ़ने से, सुनने से, छूने से, संगत के प्रभाव से । यह सब संस्कार नष्ट नहीं होते । इन सबों के चिन्ह मन की फिल्म पर सदैव के लिए पड़ जाते हैं । जब २ मन बेकार होता है या नींद में सोता है, तो स्वपन में यह फिल्म चलती है और सब संस्कार, जो चिन्ह, फिल्म पर पड़े हुए हैं, उभर पड़ते हैं और दृश्य बनकर जीव के सामने आ जाते हैं । इन्हीं के कारण जीव दुखी या सुखी होता है ।

पढ़ना, सुनना, चातुरी यह तो बात सहल ।
गगन चढ़न मन बस करन यही बात मुश्किल ॥

फिर इसका उपचार क्या है ? महापुरुष बताते हैं । मन को अपना साथी बना लो । इसको

प्रेम से समझाओ । यह समझ जाएगा । मन पर सख्ती मत करो । मन को किसी ने आज तक वश में नहीं किया । न आज तक किसी ने इस पर शासन ही किया । बल्कि यह विचार दिया गया है । यह विचार बिल्कुल ठीक है ।

पाँच सहाई जीव के, जो गुरु पूरा होय ॥

काम क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, यह पांच अवस्थाएं मन की हैं । यह सब जीव के सहायक हो सकते हैं यदि किसी सद्गुरु समर्थ से शिक्षा ली हो । मन को अपना साथी बनाने के ढंग का पता ले लो ।

आप भी अपने मन को मित्र बना लो । इसको समझाया करो । यह दौड़े तो इसे अपने केन्द्र पर वापस लाने का प्रयत्न किया करो । इसकी चौकीदारी किया करो । जब किसी साधक को, अपने मन को चौकीदारी करनी आगई, समझो इसने वाजी जीत ली । यह आज नहीं तो कल अवश्य ही सफल हो जाएगा ।

मन की चंचलता को दूर करने की श्रेष्ठतर विधि यह है । अजपा जाप छोड़ दो । सुमिरन

प्रारम्भ कर दो। यदि फिर भी एकाग्रता न आए तो ऊंची २ आवाज से सुमिरन प्रारम्भ कर दो। यदि फिर भी मन तंग करे तो मन भाता भजन शुरू कर दो। यदि फिर भी सफलता नहीं होती तो साधन छोड़ दो। थोड़ा विश्राम करो मन को हाथ और पांव फैलाने दो और उसका तमाशा देखा करो।

पहले यह मन काग था, करता जीवन घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुन २ खात॥

दुर्गादास चण्डीगढ़

साधन और उसका फल

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल पंडित फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १७ अक्तूबर १९७४

बीज से अंकुर अंकुर कोंपल, पात फूल सब आए।
फूल से फल फल मीठा लागा, खाय ताहि तृप्ताए॥
काम से धर्म धर्म से सबको, अर्थ प्रापत होई।
रचना का सिद्धान्त अद्भुत्, बिरला समझे कोई।
राधास्वामी मौज दिखाया। सारतत्व समझाया।
जो नहीं सारवस्तु को समझे, मानुस जन्म गंवाया॥

राधास्वामी। बीज से अंकुर निकलता है और फिर बढ़ता है। उसके पत्ते निकलते हैं शाखाएं बन जाती हैं तना बन जाता है और वृक्ष का रूप धारण करता है फिर उसको फल लगता है और जो आदमी उसको खाता है उसे शान्ति मिलती है। ऐसे ही पुरुष की दशा है जब आदमी में सूझ बूझ आती है

आती है तो उसके अन्तर कोई खोज पैदा होती है, व्यक्ति कुछ चाहता है। उस इच्छा को प्राप्त करने के लिए वह कभी मन्दिर में जाता है, कभी कहीं जाता है और कभी कहीं मारा मारा फिरता है। जब उसके अन्तर भक्ति भाव और प्रेम के विचार पैदा होते हैं और यह विचार बढ़ते बढ़ते जब त्रिकुटी में पहुंच जाते हैं तो उसको कुछ शान्ति मिलती है। यह इश्क लगन और चाह का मार्ग है। चाह क्या है ? काम धर्म और अर्थ है। काम का अर्थ है चाह अथवा वासना। इसको प्राप्त करने का उपाय है धर्म और जब चाह पूरी हो जाती है तो उसी का नाम अर्थ है। इसलिए संसार में जो कुछ तुम चाहते हो उसकी अपने मन में प्रबल इच्छा रखो। बिना इच्छा के कुछ प्राप्त नहीं होता और इच्छा बलिदान चाहती है। यह है नुक्ता। यदि तुम्हारे दिल में प्रबल इच्छा है तो प्रकृति तुमको उस स्थान पर पहुंचा देगी जहां से हमारी इच्छा पूर्ण होगी और तुम्हारा काम बन जाएगा। इस चाह की भी मंजिलें हैं।

साधू मिला ओम् अस्थान।

सहस कमल दल वृत्ति जमाई, विश्वमित्र कर ध्यान
भ्रू मध्य मिथिला पर ठहरे, तोड़ी शिव की कमान।

सन्त कहते हैं कि भ्रू के मध्य में वृत्ति को जगाओ यहां तुम्हारे सब विचार समाप्त हो जाएंगे। और तुम शरीर को भूल जाओगे रात को सोते समय तुम देखते हो कि तुमको नींद कैसे आती है और तुम शरीर को कैसे भूलते हो। इसको समझने से तुमको अभ्यास का सारा पता लग जाएगा। सोते समय पहले तुमको ऊंघ सी आती है, उस समय कुछ होश भी होती है, फिर जब नींद आ जाती तो फिर तुम सब कुछ भूल जाते हो। ऐसे ही पहले सुमिरन का विचार आता है फिर सुमिरन अपने आप छूट जाता है इसका नाम है कमान टूटना। जिसका सुमिरन या अजपा जाप बन जाता है वह अपने आप ही अपने आप को भूल जाता है यह आवश्यक नहीं कि तुम गुरु के नाम का ही अजपा जाप करो। किसी नाम से या किसी प्रकार से करो। एक उदाहरण सुनो। जालन्धर से एक वार मेरे पास सिविल सर्जन आया और कहने लगा कि मैं बहुत अशांत हूं। मैंने सोचा कि यदि इसको

मैं राधास्वामी नाम का सुमिरन और ध्यान बताऊंगा तो इसका विश्वास राधास्वामी नाम पर बैठेगा नहीं और यह सफल नहीं होगा। मैंने कहा कि क्या तुमको मुझ पर विश्वास है? उसने कहा कि हां है। मैंने उससे कहा कि तुम एक से सौ तक गिनो और फिर सौ से नीचे की ओर गिनते गिनते १ पर आ जाओ। ऐसे चालीस बार प्रातः और चौबीस बार सायं को करो और कुछ दिनों के पश्चात मुझे बताओ। वह फिर मिला तो कहने लगा कि बाबा जी। अब मुझे बहुत शान्ति है। संतों का मार्ग प्राकृतिक है तुम किसी भी उपाय से मन को एकाग्र करो भाव तो शरीर और मन को भूलने से है और मन की अशान्ति दूर करने से है इस प्रकार जो लोग अभ्यास करते है वह शिव की कमान को तोड़ते हैं।

सीता सती से विवाह रचाया, राम हुए बलवान।
आए अवध शरीर को सोधा, दशरथ का किया हान॥

यह रामायण में अलंकार रूप में लिखा गया है सुमिरन से जब जागृत अवस्था भूल गई तो आगे शान्ति मिली। सीता को शान्ति कहा गया है।

(Peace of mind) कों सीता कहा गया है। शान्ति मिलने से तुम बलवान हो जाओंगे। जैसे सारा दिन काम करने से शरीर थक जाता है और रात को सोने से सारी थकावट दूर हो जाती है और ताजा दम हो जाते हैं. ऐसे ही जो व्यक्ति अभ्यास करते हैं अभ्यास से उनका अशान्त मन शान्त और वलवान हो जाता है, यह सरल उपाय है मैं किसी को धार्मिक बन्धन में नहीं फंसाना चाहता। जैसे गहरी नींद के बाद जागृत में आ कर फिर काम करने लग जाते हो ऐसे ही अभ्यास के पश्चात मन फिर शरीर में आ जाता है। दशरथ क्या हैं? यह हमारा दस इन्द्रियों वाला शरोर है। मन क्योंकि शरीर में पैदा होता है इसलिए यह शरीर का बेटा है। जब वह अशान्त हो के घबराता है तो फिर साधन करके मानसिक शान्ति प्राप्त करता है।

वन में जप तप संजम नेमा, कर बाढ़ा अभिमान।
सरुपनखा की नाक कटाई, खर दूषन घुमसान॥

आदमी किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जप तप करता है उसको अपने जप और तप का अहंकार हो जाता है, उस को गुरु तोड़ता है।

अहंकार टूटने के पश्चात उसे शान्ति मिलती हैं यह अमली जीवन है यदि एक आध घण्टा मन्दिर में चले गए और शेष सारा दिन हेरा फेरी में लगे रहे तो क्या लाभ इससे प्राप्त होगा। आजकल के यह हेरा फेरी करने वाले सब मन्दिरों में जाते हैं और दान देते हैं। खर और दूषन मन की वृत्तिएं हैं। मन के तीन रूप हैं रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी। इनके दबाने या दूर करने से शान्ति मिलती है परन्तु यह वस्तु बिना गुरु के नहीं मिलती। तुमने गुरु से नाम लिया परन्तु यदि तुम्हारा आचार व्यवहार ठीक नहीं है या तुम इस ओर से मन को रोकना नहीं चाहते तो तुम को क्या मिलेगा। इसलिए मैंने रूहानियत की बजाए इन्सान बनो की आवाज उठाई है। हमारे भाव ही हमको तंग करते हैं और हम अशान्त हो जाते हैं।

रज रावण ने सीता हर ली पाया दुख महान।

जिस व्यक्ति का आचार और उसके भाव ठीक नहीं तो उसको शान्ति नहीं मिल सकती इसलिए मैं लोगों को यह आर्शीवाद देता हूं कि तुमको स्वास्थ्य मिले, रोटी मिले, और तुम्हारे मन को

शान्ति मिले (Health, wealth and peace) परन्तु यह वस्तु विश्वास करने, गुरु के बचन सुनकर उन पर अमल करने से मिलती है। मैं इसलिए किसी को नाम नहीं देता क्योंकि लोग गुरु से नाम लेकर गुरु को बदनाम करते हैं। इसीलिए मैं किसी का गुरु नहीं बना परन्तु गुरु का कर्तव्य कर चला। गुरु नाम है समझ विवेक ओर ज्ञान का। रज रावण क्या है ? हमारे भावावेश यह हम को तंग करते हैं और हमारी शान्ति को भंग कर देते हैं। तुम देखो ब्लैक करने वाले अब कितने डरते है लेकिन जो नहीं करता उसको कोई भय नहीं है।

चल विहंग मारग के रस्ते, कपि मारग दरसान।
कपि की चाल कठिन अति भारी, पहुंचे वीर हनुमान।

विहंग मार्ग और कपि मार्ग योग के साधन हैं विहंग एक पक्षी होता है जो एक शाखा से दूसरी शाखा पर फुदकता फिरता है यही हाल मन का है और यही हाल कपि अर्थात् बंदर का होता है। अभ्यास के समय तुम्हारे मन में नाना प्रकार के विचार आते हैं उनको विहंग मार्ग और कपि मार्ग से रोको। इन विचारों को छोड़कर गुरुस्वरूप को

बनाओ लेकिन उस रूप को किसी व्यक्ति का रूप मत समझो। उसको पूर्ण मानो अन्यथा सफलता नही होगी। अभ्यास में इतने मगन हो के बैठो कि गुरु स्वरूप के सिवाए तुमको कोई वस्तु अन्तर में दिखाई न दे। अभ्यास में गुरुस्वरूप के मस्तिष्क और आंख पर वृत्ति जमाओ। मैं तुमको अपने सादा शब्दों में साधन की विधि समझाना चाहता हूं लेकिन उस पर अमल वह करेगा जिसको सच्चाई और शान्ति की लगन है। यदि दस मिनट भी तुम्हारी वृत्ति ऊपर चली जाए तो सारा दिन प्रशन्नता और शान्ति से गुजरेगा। जैसे सारा दिन काम करने से तुम थक जाते हो और फिर थोड़ी देर नींद ले लेने के बाद फिर चेतन्य हो जाते हो यह अमली पहलू है लेकिन शर्त यह है कि तुमको पूर्ण गुरु, मिल जाए गुरु बावा फकीर या कोई और देहधारी नहीं है गुरु एक शक्ति है शर्त यह है कि किसी को मिल जाए और फिर चेतवान हो कर साधन करो लेकिन बिना श्रद्धा विश्वास और प्रेम के साधन नहीं होता। यही कारण है कि चालीस २ साल के सत्संगी कोरे

के कोरे हैं और उनको कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। एक विचार को छोड़कर दूसरे विचार को दृढ़ता-पूर्वक पकड़ना शूरवीरों का काम है हनुमान का काम है। हनुमान का अर्थ है "मान को हनन करना" अर्थात् अपने अहंकार और Attachment को छोड़ना।

लंका जाय अशोक वाटिका देखी सीता आन।

हमारे मन की वृत्ति जब त्रिकुटि में पहुंच जाती है तो वहां अशोक अर्थात् शोक समाप्त हो जाता है व्यक्ति निश्चिन्त और शोक रहित हो जाता है और शान्ति प्राप्त करता है परन्तु नीचे आने से कल्पनाएं उभरती हैं। इनको सदैव के लिए समाप्त करने की क्या विधि है ?

तब पिपीलिका मारग सोधा, सप्त सिंध सति जान
वानर रीछ राक्षस सैना, लंका किया चढ़ान।

इसके पिपील का मार्ग अर्थात् च्योंटी का मार्ग है अर्थात् धीरे धीरे चलो। पहले तो छलांग मार के गए थे। गुरुस्वरूप प्रकट हो गया। अपनी सुरत को धीरे २ मूर्ती में लगाते रहो। ध्यान जमाते समय तीनों प्रकार (रजोगुणी तमोगुणी और सतो

गुणो) वृत्तियां भी तुम्हारे साथ होंगी उनको साथ लेकर चलो। यह प्रेम और भक्ति का मार्ग है। ज्ञानी को यहां पहुंचने में कठिनाई होती है।

ज्ञान का पन्थ करपान की धारा
चढ़त खगेश न लागत वारा।

इसलिए प्रेम और भक्ति के मार्ग से चलो।

रज तम सत गुन इनको समझो, वृत्ति सुशील सुहान।
रज रावण तम कुम्भकर्ण को, मारा तक तक बान॥

रज और तम के प्रबल भाव जीवन भर रहेंगे मगर इनको नियन्त्रण में रखो। विभीषण अर्थात् प्रेम और स्नेह का गुण रहें। प्रबल भावों का नाम रावण है। आलस्य और लापरवाही ही तमोगुण है। इन दोनों को त्यागना पड़ता है तब आगे चेतनता आती है।

मेघनाथ त्रिकुटी गढ़ जीता, सत विभीषन सन्मान।
सीता सत वृत्ति ले लौटे, चढ़ पुष्पक विमान॥

मेघनाथ है बादल की गरज। अन्तर में ओं की धुन या बादल की गरज या बम बम या मुसलमानों के अनुसार अनाहू की ध्वनि सुनाई देती है। इस ध्वनि को सुनने से शान्ति मिलती है। जब अशान्ति

देने वाले गुण मर जाते हैं फिर शान्ति मिलती है फिर जीवन मुक्त अवस्था आती है वह संसार के सारे व्यवहार करता हुआ कल्पना नहीं करता ।

देह अवध का काज सुधारा, पाया अद्भुत ज्ञान ।
ताके पीछे गुप्त घाट में. घट सरजू में आन ।।

उसका अशांत मन जो उसको तंग करता है वह शान्त हो जाता है । कई आदमी विचार से शान्ति लेते हैं जैसे वाचक ज्ञानी । मगर जब रहनी का प्रश्न उठता है तो वह गिर जाते हैं इसलिए जब तक चित्तवृत्ति का निरोध नहीं होता तब तक जो ज्ञान प्राप्त है उसका कोई विश्वास नहीं है ।

कथा सुनी पर भेद न पाया खुली न हिय की खान ।
राधास्वामी की दया से सुरत शब्द मिल छान ।।

रामायण सुनी किन्तु भेद न पाया कि राम क्या है और सीता क्या है । यह आध्यात्मिक बातें हैं । आजकल जो खोज हो रही हैं उसमें श्री कृष्ण जी के समय की बहुत सी वस्तुएं मिलती हैं परन्तु श्री रामचन्द्र के युग की कोई वस्त नहीं मिली और न कोई प्रमाण मिलता है इसलिए कई लोग तो यह कहते हैं कि ऋषियों ने रुहानियत को कथा के

रूप में मानव जीवन पर घटाया है। रोचक, भयानक ओर यथार्थ प्रकार की शिक्षा है कोई किसी शिक्षा का अधिकारी है और कोई किसी शिक्षा का। परन्तु संसार अधिकतर रोचक बातों को पसन्द करता है। मैं बात कहता हूं यही हाल गीता का है। गीता की भाषा और भागवत की भाषा में अन्तर है। किसी सन्त ने या किसी महापुरुष ने कृष्ण ओर अर्जुन को माध्यम बनाकर गुरु और चेला बनाकर सार ज्ञान का सारा भेद गीता में भर दिया इसका प्रमाण सुनो। गीता के हर एक अध्याय के महात्म में यह लिखा हुआ है कि इस अध्याय के पढ़ने या सुनने वाले को यह फल मिलेगा या वह मुक्त हो जाएगा। यदि सचमुच अर्जुन ने गीता सुनी हुई होती तो वह भी मुक्त हो जाता लेकिन भागवत में लिखा है कि पांचों पाण्डव नरक में गए। गीता की शिक्षा शत प्रतिशत ठीक है गलत नहीं। इसके अतिरिक्त खोज करने वालों ने कुरुक्षेत्र के मैदान में उस समय के समाचार और बातचीत को रिकार्ड करने का प्रयत्न किया है। आदमियो का शोर घोड़ों का हिनहिनाना और

हाथियों का चिघाड़ना, तो रिकार्ड हो गया लेकिन गीता की बात कहीं भी रिकार्ड में नहीं आई। संसार भी गीता को समझने का प्रयत्न नहीं करता केवल कृष्ण और अर्जुन का ही नाम लेता है। कुरानशरीफ, वेद, कबीर साहिब की वाणी या सार वचन का प्रमाण देता है मगर अमली जीवन कोई नहीं गुजारता। असली वस्तु तो सुरत शब्द योग है किन्तु जब तक मन की वृत्तियां एकाग्र करके पहले मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं होगी तब तक सुरत शब्द योग नहीं कर सकोगे। मैं अब नीचे की सब श्रेणियें छोड़ गया हूं कोई संकल्प या कोई विचार नहीं उठता। यह सुन्न अवस्था है फिर एक स्वाभाविक शब्द पैदा होता है वह है "सतनाम" जिस प्रकार राम ने रावण को मार कर और अयोध्या में आ कर राम राज्य स्थापित किया इसी प्रकार व्यक्ति अपने शक्तिशाली भावों को समाप्त करके शान्ति प्राप्त करता है फिर समय आ जाता है, जब यह मानसिक शान्ति भी समाप्त होने लगती है, यह है राम का सीता को वनवास देना। फिर वह सरजू में जा कर डूब मरे अर्थात् मन की ओर से

मानसिक आनन्द और प्रसन्नता की ओर से अपने असली रूप में ब्राह्ममय या प्रकाशमय है, उसमें जीव चला जाता है। असली रुहानियत या असली नाम इससे आगे आरम्भ होता है। रुहानियत के देश का नाम सतपद है, वहां मनुष्य की सुरत की सहायता शब्द करता है और वह वैसी ही एक सृष्टि है जैसे यह मन का मण्डल है और ऐसे ही आध्यात्मिकता का एक बहुत बड़ा मण्डल है। इसमें व्यक्ति की सुरत सैर करती रहती है। उसका नाम है आत्मानन्द या सुरतानन्द। कबीर साहिब ने लिखा है :—

हम वासी उस देश के जहां बारह मास विलास।
प्रेम झरे विगसे कमल तेज पुन्ज प्रकाश।

निचले शब्द तो मन को शान्त रखने के लिए हैं रुहानियत तो बाद में आती, है लोग सुमिरन ध्यान को ही रुहानियत समझते हैं यह भूल है, रुहानियत आ जाने पर तो न गुरुस्वरूप की आवश्यकता रहती है न सुमिरन ध्यान की आवश्यकता रहती है। यह बहुत ऊंची बात है इसको सब व्यक्ति समझ नहीं सकते। जब मन शान्त हो जाता हैं तो फिर जब तुम ध्यान लगाओगे तो अपने आप शब्द आ जाएगा

जैसे अन्धेरी रात मैं जंगल में सुनसान स्थान पर यदि तुम बैठ जाओ तो तुम Atmosphere की ध्वनि स्वयं सुनोगे ऐसे ही आदमी का मन जब रूप रंग आदि से शान्त हो जाता है तो फिर उसके अन्तर प्राकृतिक शब्द पैदा होता है, वह है नाम। फिर उससे आगे नाम का देश है। लोग वर्णात्मिक नामों पर लड़ते हैं यह तो केवल मन को सुन्न करने के लिए हैं, इसके बाद नाम है, वही राधास्वामी नाम है, वही निज नाम है और वही सतनाम है।

मैंने अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया। यह अभ्यास आसान है। प्रातः एक स्थान पर बैठो। वहां पर पूजा पाठ के अतिरिक्त और कोई दूसरी बातचीत न हो। अभ्यास के लिए विशेष वस्त्र हों। हमारे विचारों का प्रभाव कपड़ों में भी जाता है, जैसे चोर को पकड़ने वाले कुत्ते चोर की बू या खुशबू के पीछे चलते हैं। अभ्यास के लिए एक समय रख लो तो बहुत ही अच्छा है। जब मन सुन्न हो जाए तो फिर कोई विशेष समय की आवश्यकत नहीं रहती, पिछले समय में स्त्रिएं एक ही वस्त्र भोजन बनाने के लिए रखती थीं ताकि दूसरे विचारों का प्रभाव

कपड़ों के साथ भोजन में न जाए। इसलिए अभ्यास के लिए भी विशेष वस्त्र होना चाहिए। यदि अभ्यास में मन न लगे तो थोड़ी देर के लिए अभ्यास को छोड़ दो और वाणी का पाठ करो। यदि उसमें मन न लगे तो बड़े प्रेम से जोर जोर से गाओ। अच्छे विचार रखो और अभ्यास करो ५-६ मास में अभ्यास बनना आरम्भ हो जाएगा, अभ्यास से मन शांत रहता है। यदि मन विचलित होना आरम्भ हो जाए तो अपने मन की निरख परख करो और सबसे अच्छी बात तो यह है कि कोई न कोई निष्काम करते रहो। जो काम निष्काम किया जाता है उसका प्रभाव मन पर नहीं रहता बल्कि उससे प्रसन्नता मिलती है जो काम अपने स्वार्थ के लिए किया जाता है उसका अक्स मन पर पड़ता है। ब्राह्मण वस्त्र उतार कर भोजन किया करते थे और भोजन करते समय बोलते भी नहीं थे ताकि विचारों का प्रभाव भोजन में न जाए और आजकल क्या होता है ? जब पति भोजन करने बैठता है तो भोजन उसके सामने रख कर स्त्री घर के सारे झगड़े उसके सम्मुख रख देती है और उनका प्रभाव

भोजन उसके भोजन में जाता है ऐसी दशा में जीव को शान्ति कैसे मिल सकती है। रुहानियत और दुनियादारी का आपस में कोई मेल नहीं है।

भोजन करने से पहले वह भोजन भगवान को अर्पण किया करो और भोजन करते समय मालिक का ध्यान किया करो। रुहानियत महासुन से आगे है और यही हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज कहा करते थे लेकिन मेरी तरह से स्पष्ट वर्णन किसी ने नहीं किया।

सबको राधास्वामी

सत्संग परम सन्त परम दयाल हजूर पंडित फकीर चंद जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक ६ अक्तूबर १९७४ स्थान अमृतसर

राधास्वामी ! बचपन से मालिक को मिलने को मिलने की इच्छा थी। श्री रामचन्द्र जी और श्री कृष्ण जी की पूजा किया करता था। फिर बुरी संगत में पड़कर दो तीन पाप कर्म कर बैठा। मेरे ताया का लड़का भाई राम नारायण प्रातः उठ कर बर्फ को तोड़ कर ठण्डे पानी से नहाता और रामायण का पाठ किया करता था वह मेरे पास रहता था और मुझे रोटी पका कर खिलाया करता था। मैं प्रातः विस्तर से उठता और बिना हाथ मुंह धोए और नहाए माँस का कटोरा सामने रख लेता। पण्डित राम नारायण को मांस से बहुत घृणा थी। एक दिन प्रातःकाल जब वह मुझे भोजन देने लगा

तो उसने सिर और मुंह पर कपड़ा लपेटा हुआ था और दूर से ही मेरी थाली में फुलका फेंका उस समय मुझे विचार आया कि फकीर ! तू किधर जा रहा है और तेरा भाई राम नारायण किधर जा रहा है। मैंने मांस उठा के बाहर फेंक दिया। उस घटना ने मेरे जीवन को बदला। रामायण में आता है :---

नाना भांति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा

मुझे यह जनून पैदा हो गया कि यदि राम मिल जाए तो जीवन में पाप धो डालूं और यही जनून मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। मुझे पता नहीं था कि सन्तमत क्या वस्तु है इनकी वाणी में सबका खण्डन है। राम और कृष्ण को काल का अवतार कहा गया है। सूफी और वेदान्ती, ऋषि और मुनि कोई भी अपने आद घर नहीं पहुंचे मेरे लिए यह एक आश्चर्यजनक बात थी। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज पर पूर्ण विश्वास था इसलिए मैं उनको छोड़ न सका। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो

मेरा अनुभव होगा वह ससार को बता जाऊंगा। इसलिए मैं जो यह काम करता हूं यह मेरा अपना ही कर्मयोग है यह किसी पर मेरा उपकार नहीं है। हो सकता है कि मेरे कर्म कटाने के लिए ही मुझे यह काम मिला हो। मैं तो यह काम भी नहीं करना चाहता था क्योंकि मैंने सच कहना था और संसार सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नहीं इसलिए मैं हजूर बाबा सावन सिंह जो महाराज के पास गया और कहा कि महाराज ! मेरे गुरु महाराज जी ने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी थी लेकिन मेरी सच्चाई के कारण संसार मेरा विरोधी हो रहा है इसलिए मैं यह काम करना नहीं चाहता, इसके लिए आप मुझे आज्ञा दें तो मैं यह काम न करूं। उन्होंने कहा कि फकीर ! डेरे के कारण मैं सच्चाई वर्णन नहीं कर सका और जीव भी अधिकारी नहीं तुम खुल खेलो और खूब काम करो मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा।

भटनागर साहिब। आप लोग बुला लेते हैं और मैं आ जाता हूं। जी चाहता है कि राधास्वामी मत को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कर जाऊं लेकिन आप

लोग अधिकारी नहीं हैं और आप को सन्तमत को समझने की आवश्यकता नहीं है। आप लोगों को तो संसार चाहिए। सुनो हजूर दाता दयाल जी महाराज निम्नलिखित शब्द में क्या लिखते हैं :—

धन्य धन्य सतगुरु दयाला, कृपा सागर दुःख भंजन।
संकट मोचन भव भय खडंन, काम निकन्दन जन रंजन॥
कोटि काम छबि अंग विराजे, शोभाधारी हितकारी।
सुर मुनि ऋषि सब ध्यान लगावें, इन्द्र वरुण आज्ञाकारी॥
शेष सहस मुख वरणे महिमा, नारद शारद गुन गावें।
अस्तुति ठानें पूजा धारें, भक्ति अनूपम वर पावें।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम, व्यापक विरज महान महा।
वेद बखाने लीला तेरी, समझ समझ पदकमल गहा॥
तू है सिंध अगाध गंभीरा. लहर विष्णु अज त्रिपुरारी।
धन्य धन्य तू धन्य धन्य है, धन धन तू जगदा धारी॥
सबका प्यारा सबका प्रीतम, घट घट का तू नित वासी।
आनन्द मंगल रूप है तेरा, आनन्दमय आनन्द रासी॥
सहस कमल में ज्योति निरंजन, त्रिकूटी पद का ओंकारा।
सुन्न महासुन्न पारब्रह्म तू, भंवर गुफा सोहंग सारा॥
सतलोक का सत्त पुरुष तू, अलख अगम का करतारा।
राधास्वामी धाम में राधास्वामी, सुरत शब्द का भंडारा॥
तेरी सेवा तेरी पूजा, तेरा सुमिरन ध्यान रहे।
राधास्वमी चरन शरन बलिहारी, तेरा ज्ञान हर आन रहे॥

यह है राधास्वामी सतगुरु की पूजा और गुरु

का रूप लेकिन तुम लोग क्या करते हो कोई बाबे फकीर को पूजता है कोई सन्त कृपालसिंह को पूजता है कोई हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज को पूजता है और कोई स्वामी महेश्वरानन्द जी को पूजता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने खुले सत्संग में मुझे यह आज्ञा दी थी कि फकीर ! युग बदल जायेगा, पन्थ और सम्प्रदाय बदल जाएंगे और मेरी शिक्षा को भी लोग पसन्द नहीं करेंगे इसलिए चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। क्योंकि मेरे जिम्मे यह कर्तव्य है इसलिए मैं यह काम करता हूं। यहां एक व्यक्ति (मस्ताना) आया हुआ है। इसने मुझे पत्र लिखा कि मैं व्यास गया, आगरा गया, जगह जगह घूमा लेकिन कहीं कुछ न मिला अन्त में सन्त कृपालसिंह जी महाराज एक हीरा मिले थे वह भी चले गए। फिर यह लिखता है कि आप का रूप मेरे अन्तर प्रकट हुआ और मुझे कहा कि मेरे पास आ जाओ। मैं उस रूप को जानता नहीं था और न ही उसने अपना नाम व पता बताया इसलिए मैं चकित था कि मैं कहां खोज करूं। इसी बीच आप के यहां से जो "मानव

मन्दिर" मासिक रसाला प्रकाशित होता है जिसका कि पहले कोई मुझे ज्ञान नहीं था एक जगह मिल गया उसमें मैंने जब आपका फोटो देखा तो यह वही रूप था जो मेरे अन्तर प्रकट हुआ था। तब इसने मुझे पत्र लिखा कि मैं आपके पास आना चाहता हूं मैंने इसको उत्तर दिया कि मैं अमृतसर आ रहा हूं आप मुझे वहां मिलना ।

सुनो ! यदि तुम लोगों के अन्तर किसी का रूप प्रकट हो जाता है तो तुम लोग उसकी गुड्डी चढ़ा देते हो। मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं इसके अन्तर नहीं गया। ऐसे ही लोगों के अन्तर राम, कृष्ण, देवी देवता या किसी गुरु का रूप प्रकट हो जाता है। यह सब काल ओर माया है। राधास्वामी मत काल और माया से निकालने के लिए आया था परन्तु संसार उलटा इसमें और भी फंस गया। आजकल तो यदि कोई ऐसी बात बताता है तो उसके सामने लौडस्पीकर रख देते हैं कि सुनों भाई ! यह व्यक्ति क्या कहता है ताकि और भी मुर्गे फंस जाएं। मेरे सामने बाबा चरणसिंह जी महाराज और सन्त कृपालसिंह जी महाराज और

भी सब सन्त मानते हैं कि हम कहीं नहीं जाते लेकिन इनमें पब्लिक प्लेटफार्म पर यह बात कहने का उत्साह नहीं है। इस बात को पर्दे में रख कर गुरुओं ने संसार को मूर्ख बना कर बहुत लूटा है। लोग अज्ञानी हैं किसी के अन्तर कोई रूप प्रकट हो गया बस उसने हजारों रुपए उस गुरु के सामने रख दिए, उसका मन्दिर बना दिया या उसका डेरा बना दिया।

मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु। जिसका जी चाहे मेरे पास आए जिसका जी चाहे न आए। कबीर मत या राधास्वामी मत संसार को इस अज्ञान से निकालने के लिए आया था लेकिन हम लोग तो और भी फंस गए कोई कहीं जाता है कोई कहीं जाता हैं और वहां जा के लुट जाते हैं। करोड़ों और अरबों रुपए इन स्थानों, डेरों, मठों और मन्दिरों पर अज्ञान के कारण व्यय हो गए। इस दशा को देख कर मैं अनामी धाम से संसार में यह कहने के लिए आया हूं कि ऐ इन्सान! गुरु के असली रूप को जान। गुरु को बाबा फकीर या

या कोई और देहधारी इन्सान मत समझ :—

गुरु को मानुष जानते सो नर कहिए अन्ध,
दुखी होंए संसार में आगे जम का फंद,
गुरु किया है देह को सत्गुरु चीना नाहीं,
कहै कबीर ता दास को तीन ताप भरमावें।

जो व्यक्ति बाबे फकीर की देह को ही गुरु मानता है वह लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता। इन महापुरुषों के सत्संग में जा कर उनके बचन सुनो, और समझो और उन पर अमल करो तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा। केवल इनकी प्रशंसा करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। भटनागर साहिब ! आप मुझे बुलाते हैं और मैं आ जाता हूं मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूं आप मेरी बात समझो या न समझो, इस पर अमल करो या न करो, मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है। जीव सन्तमत की शिक्षा के अधिकारी नहीं हैं। यह गुरु लोग जो सर्वसाधारण को नाम दे रहे हैं यह लोगों के कल्याण लिए नहीं दे रहे यह तो अपने नाम और अपने यश के लिए दे रहें हैं। अमरजीत के मकान पर मैंने Globe देखा तो

विचार आया कि हमारे पूर्वजों ने कितनी खोज करने के बाद यह पता किया कि यहाँ पहाड़ हैं इनकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई कितनी है, यहाँ समुद्र है कितना लम्बा चौड़ा है और किस स्थान पर कितनी गहराई है, किस जगह कितनी वर्षा होती है और क्यों होती है अमुक स्थान पर वर्षा क्यों नहीं होती आदि २। अब यह तो आप लोगों को सारा ज्ञान बतला गए लेकिन जब तक तुम्हारे पास रुपया नहीं है और तुम स्वस्थ नहीं हो तो तुम वहां नहीं जा सकते। ऐसे ही सन्तों ने किसी ने सहसदल कमल की, किसी ने त्रिकुटि की और, किसी ने किसी अवस्था की खोज की और किसी ने सारी खोज को एकत्रित करके संसार के सामने चित्र प्रस्तुत कर दिया और यहां के सुख और आनन्द के बारे आप लोगों को बता दिया। अब जब तक तुम उन केन्द्रों पर स्वयं नहीं जाओगे उस सुख और आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकते। पुरुष के मस्तिष्क ने बहुत उन्नति की है। किसी समय पैदल चल कर यात्रा की जाती थी फिर बैलगाड़ियां और टांगे बन गए फिर रेलगाड़ियां, मोटरें और कारें

बन गईं फिर हवाई जहाज बन गए और अब तो राकेट के द्वारा चांद तक लोग पहुंच गए ।

एक सौदागर दूसरे देश से कोई वस्तु लाता है उसका कुछ भाग वह तुमको दे देता है और तुम उससे लाभ उठाते हो । ऐसे ही सन्तों ने यहां बैठ कर ऊपर के लोकों की खोज की और वहां से क्या लाए ? बोधमान, (Feelings of mind and spirit) मन के ज्ञान और अनुभव और आत्मा के आनन्द का कुछ भाग जो वहां से वह साधन करने के बाद लाए वह तुम उनसे ले सकते हो परन्तु पूरा लाभ तुमको तब मिलेगा जब तुम साधन कर के स्वयं वहां का अनुभव करोगे । मैंने आरम्भ से लेकर ऊपर तक सफर किया है । पहले मैं साध गति में था । मुझमें सिद्धी शक्ति थी । किसी को कोई प्रसाद दे देता था तो निशाना चूकता नहीं था । फिर हंसगति में आया उस समय और बात थी । अब मैं परमसन्त गति में जाता रहता हूं । अब मेरे पास से यदि कोई कुछ ले सकता है तो शान्ति ले सकता है परन्तु ले वह सकता है जिसमें विश्वास हो दूसरा नहीं ले सकता । मेरे सत्संग से लोगों को

लोग कहते हैं कि बाबा जी ! आपके मानवता मन्दिर में जाने से ही हमको शांति मिल जाती है। तो क्या मैं देता हूं ? मैं नहीं देता तुम ले जाते हो, कैसे ? जिसकी संगत करोगे उसकी Radiation तुम पर प्रभाव डालेगी। सन्त क्योंकि शान्तचित होते हैं इसलिए उनकी Radiation से तुमको शांति मिलेगी। इसीलिए कहा गया है सन्तों से प्रेम करो। यह आवश्यक नहीं कि तुम उसको गुरु ही मानो। उसको भाई मान लो, बाप समझ लो, मित्र समझ लो और नहीं तो उसको तू समझ लो। सन्त किसी का कभी भी बुरा नहीं चाहता, यह सन्त की पहचान है। वह पापी से पापी और बुरे से बुरे व्यक्ति का भी बुरा नहीं चाहता। हमने सुख प्राप्त करना है। इसलिए जिन व्यक्तियों ने इस लाइन पर सफर किया है उनसे परामर्श लेना आवश्यक है चाहे तुम उसको गुरु ही मानो। गुरु तो वह है जो हजूर दाता दयाल जी सहाराज ने ऊपर के शब्द में बतलाया है और वह गुरु केवल एक है। संसार ने गुरुमत को समझा नहीं है संसार तो गुरु पशु बना हुआ है। एक महापुरुष

(मैं नाम नहीं लेना चाहता) के चोला छोड़ने पर कई व्यक्ति आत्मघात कर गए। उनकी जिम्मेदारी किस पर आती है? उस महापुरुष पर क्योंकि उसने लोगों को गुरु का सच्चा रूप नहीं समझाया। किसी आदमी को अपने निजी स्वार्थ के लिए अज्ञान में रखना और अपने जाल में फंसाना बहुत बड़ा अपराध है। मैं एक बार पंजाब क्लाथ हाउस में बैठा हुआ था तो वहां एक इंजनीयर आया कपड़ा मोल लेने के लिए। वह राधास्वामी मत को बहुत गालिएं देने लगा। मैंने समझा कि शायद वह मुझे देख कर गालियां दे रहा है। मैं तो चुप रहा परन्तु उससे किसी ने कारण पूछा तो उसने बताया कि अमुक महापुरुष के मर जाने पर मेरी स्त्री नदी में कूद कर मर गई ओर छः बच्चे छोड़ गई। अब उसके लिए उनकी देख भाल बहुत कठिन हो रही है। इसलिए में कोई परदा नहीं रखता और बिलकुल सच्चाई से काम लेता हूं। मेरे सतगुरु हजूर दाता दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने पर मेरी आंखों में आंसू तक नहीं आए और मुझे कोई शोक नहीं हुआ। समझते हो मस्ताने। सन्त कृपालसिंह जी

चले गए तो क्या हुआ क्या मैं नहीं जाऊंगा ? जो यहां आया है वह एक दिन अवश्य जाएगा। कोई बेटे को मौत पर रोया कोई गुरु की मृत्यु पर रोया। क्या अन्तर है दोनों में ? गुरु के असली रूप को समझो।

सतगुरु चीन्हो रे भाई।
सतनाम बिन सब नर बूड़े, नरक पड़ी चतुराई।
वेद पुरान भागवत गीता, इनको सबै हटावै
जा को जनम सुफल रे प्राणी, सो पूरा गुरु पावै
बहुत गुरु संसार कहावें, मन्त्र देत हैं काना
उपजैं विनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना
सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कड़िहारा।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लें औतारा॥

आजकल गुरुओं की बाढ़ आई हुई है एक पत्थर उठाओ दस गुरु निकलते हैं। गुरु तो ज्ञान अनुभव और शब्द का नाम है जिससे तुमको ज्ञान प्राप्त हो जाए वही तुम्हारा गुरु है। स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि यदि एक गुरु से तुमको सार भेद नहीं मिला तो तुम दूसरे के पास चले जाओ और वहां से सार भेद लो। भटनागर साहिब ! तुम लोग हर प्रकार से मेरी सेवा करते

हो । मैं तुम लोगों को सत्संग करा रहा हूं । जैसे इस मस्ताने ने कहा है कि मेरा रूप उसके अन्तर प्रकट हुआ । मैं तो गया नहीं परन्तु यदि मैं परदा रखता तो संसार को लूट के खा जाता । ऐसे ही जब मैं १९७२ में अमरीका गया तो प्रधान निक्सन का Body Guard (अंग रक्षक) पन्दरह सौ मील से हवाई जहाज में मेरे पास आया और कहा कि आपका रूप मेरे अन्तर प्रकट होता है । मैंने कहा कि मैं नहीं जाता । संसार को सच्चाई का पता नहीं इसलिए मूर्ख बनकर लूटा जा रहा है । इसलिए मैं आप लोगों के लिए आया हूं ।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा
दुखी जीव को अंग लगा कर लेजा गुरु के देसा
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी

मैं जो बचन कहता हूं यही मेरा नाम दान है मैं किसी के कान में फूंक नहीं मारता और न ही किसी को राधास्वामी नाम या पांच नाम बताता हूं । क्यों ? पंजाब में घुमान नामी गांव जो कि हजूर बाबा जैमल सिंह जी महाराज

का जन्मस्थान है वहां का एक सत्संगी सरदार भान सिंह प्रतिमास मेरे पास आया करता था। उसने मुझे बताया कि जब मैं १५-१६ वर्ष की अवस्था का था तो उस समय बाबा जैमल सिंह जी महाराज गांव में आकर सत्संग कराया करते थे। तो मैं भी सुना करता था। उन्होंने कहा था कि जब पंजाब पर आग बरसेगी उस समय जो सन्त सतगुरु आएगा वह संसार को नाम दान नहीं देगा वह अपने बचन और दष्टि से ही जीवों का उद्धार करेगा। वह सन्त सतगुरु मैं हूं। भानसिंह मुझे गुरु मानता था।

तुम मुझे प्रतिमास बुलाते हो। मैं अपनी जान बचाना चाहता हूं। यदि मैं आप लोगों को सच्चाई वर्णन न करता और तुम लोगों को अज्ञान में रख कर तुम से धन लेता हूं तो मैं इस पाप कर्म के फल से बच नही सकता। अब यदि मस्ताने को मैं यह कह दूं कि आजा बेटा मेरी शरण में, मैं तुमको सतलोक पहुंचा दूंगा। तो इससे मैं जो धन लूंगा क्या यह (Smuggling) नहीं है? मैं

इन गुरुओं तथा महात्माओं से पूछना चाहता हूं कि जब तुम किसी के अन्तर नहीं जाते और न ही किसी को उसके अन्त समय पर तुम लेने जाते हो लेकिन जीवों को अज्ञान में रख कर उनसे धन लेते हो, मान प्रतिष्ठा लेते हो तो क्या इस बुरे कर्म के फल से तुम बच जाओगे ? कदापि नहीं। जिस प्रकार इस समय Smuggler पकड़े जा रहें हैं तो क्या तुम इसSmugglingके दोष से कैसे बच जाओगे ? ६-७ वर्ष में समय की परिस्थितियां बदलेंगी और यह Smuggler गुरु भी गिरफ्तार किए जाएंगे। यह मेरी (Prediction' भविष्यवानी है। गुरु तो समझ विवेक और ज्ञान का नाम है लेकिन तुम इस बात को समझते नहीं हो। रात को स्वप्न में तुम्हारी स्त्री या लड़का या लड़की आ जाते हैं। प्रातः उठ कर उनसे पूछो कि क्या वह आए थे ? नहीं, यही अज्ञान और भ्रम है। इसी कारण मानव जाती लुट गई। कोई हिन्दू बन गया, कोई सिक्ख बन गया, कोई मुसलमान बन गया। नाना धर्म बन गए और आपस में घृणा द्वेष पैदा हो गया। इसको दूर करने के लिए

सन्तमत संसार में आया। तुम देखो कि सन्तों का कोई धर्म नहीं होता वह सबके सांझे होते हैं। मैंने स्पष्ट वर्णन कर दिया। अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। कोई मेरे पास आए या न आए कोई मेरा सत्संग सुने या न सुने। हां ! यदि कोई यह समझता है कि इस शिक्षा को फैलाने में जीवों का भला होगा तो वह जो इच्छा हो मानवता मन्दिर की सहायता करें। गुरु कौन है ? यह हजूर दाता दयाल जी महाराज की जवानी सुनो :—

धन्य धन्य सत्गुरु दयाला, कृपा सागर दुख भंजन।
संकट मोचन, भव भय खंडन, काम निकन्दन जन रंजन

यह गुण किसमें है ? तुम्हारे भव को कौन तोड़ेगा ? क्या बाबा फकीर तोड़ेगा ? तुम भूल में हो। जब शरीर और मन को छोड़कर तुम्हारी सुरत प्रकाश और शब्द में जाएगी तो फिर तुमको भव नहीं सतायेगा। जैसे जब तुमको गहरी नींद आ जाती है तो उस समय तुमको न किसी के मरने का और न किसी कष्ट का मान होता है। ऐसे ही तुमको इन दुखों से बचाने वाला शब्द स्वरूपी

गुरु है जिसके चरण प्रकाश हैं। यही कबीर साहिब ने कहा है :---

शब्द गुरु को कीजिए बहुते गुरु लवार
अपने अपने स्वाद को ठौर ठौर बटमार

वह गुरु धन्य है। बाहर के गुरु ने तुमको सच्चे गुरु का पता बताया है कि वह तुम्हारे अन्तर है। जब पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड से परे जाओगे तब गुरु को पाओगे। भटनागर साहिब ! मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूं। तुम खर्च करते हो। मैं सच्चाई वर्णन किए जा रहा हूं।

कोटि काम छवि अंग विराजे, शोभाधारी हितकारी
सुर मुनि ऋषि सब ध्यान लगावें, इन्द्र वरुण आज्ञाकारी

सारा संसार जिसको पूजता है उसकी तुमने सुन ली। क्या मेरी छबी ऐसी है या किसी बाहिरी गुरु की छबी ऐसी है ? नहीं। वह असली गुरु शब्द और प्रकाश है और वह तुम्हारे अन्तर रहता है। हजूर दाता दयाल जी ने मुझे समझाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आई। अन्त में उन्होंने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी और कहा कि तुमको सच्चे सतगुरु के दर्शन

सत्संगियों के रूप में होंगे और अब हो गए। बात समझ में आ गई इसलिए लोग मेरे सच्चे सत्गुरु है। लेकिन यह दया हजूर दाता दयाल जी महाराज की है। कपूर सिंह जी ! अपना जन्म बनाओ यह सांसारिक झगड़े कभी समाप्त नहीं होंगे। सच्चा सतगुरु शरीर और मन से परे है और यह ही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा है :--

राधास्वामी निज स्वरूप गोता मार तन के कूप,
हो जा सुख राशी

जीव अज्ञानी हैं। गुरु मिल जाता है और ज्ञान दे देता है लेकिन वहाँ पहुंचना हर एक का काम नहीं है। इसलिए पहले वहां जाने के अधिकारी बनो। अधिकार सचरित्रता से बनता है।

अधिकारी कौन है ?

विषयों से जो होए उदास, परमार्थ की जा मन आसा
धन सन्तान प्रीत नहीं जा के, खोज़त फिरे साध गुरु जाके

ऐसा व्यक्ति नाम का अधिकारी होता है। आज कल तो ९-१० साल के बच्चे को भी नाम दे दिया जाता है। वह जवानी में आ कर विषय विकार का जीवन व्यतीत करने लग जाता है और नाम भी

कमाता है। उसका जीवन बिगड़ जाता है :---

शेष सहस मुख वरणे महिमा, नारद शारद गुन गावें
अस्तुति ठानें पूजा धारें भक्ति अनुपम वर पावें

उस मालिक को कोई किसी प्रकार पूजता है कोई किसी प्रकार पूजता है। मन्दिर का पुजारी मूर्ती को पत्थर तो नहीं समझता वह इसका सहारा लेकर ब्रह्मा या विष्णु या जो भी इसने इष्ट बनाया हुआ है उसकी पूजा करता है।

अपरम्पार पार पुरुषोत्म, व्यापक विरज महान महा।
वेद बखाने लीला तेरी, समझ समझ पद कमल गहा।

यह सारी लीला उस अन्तर के गुरु प्रकाश और शब्द की गाई गई है बाहर के गुरु की नहीं। इसलिए राधास्वामी मत में कहा गया है कि अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को प्रगट करो लेकिन तुम कर नहीं सकते क्योंकि तुम सांसारिक वस्तुओं की बहुत आवश्यकता समझते हो। जब तक इस संसार से किसी को वैराग्य नहीं होता वह राधास्वामी मत का अधिकारी नहीं होता। कई व्यक्ति बल-पूर्वक अभ्यास भी करते हैं और काम भी भोगते हैं

उनका जन्म बिगड़ जाता है। मैं भी ऐसा ही था। तुम्हारे भले के लिए अपनी त्रुटिएं वर्णन कर रहा हूं। बसरे बगदाद चला गया। बारह साल वहां रहा। क्योंकि घर से दूर रहा इसलिए शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य स्थित हो गया और कमी पूरी हो गई। उस समय का यदि मेरा फोटो देखो तो खिंच जाओगे। वहां से वापस आया हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी कि सन्तान उत्पन्न करो। मैं विषय विकार और स्वाद में फंस गया। मेरा सारा अभ्यास बिगड़ गया। शक्ति तो एक ही है उससे चाहे विषय कमाओ और चाहे मस्तिष्क में जा कर अभ्यास करो। इसलिए जो आदमी अभ्यास करते हैं उनको अधिक विषय विकार में नहीं पड़ना चाहिए अन्यथा उनकी दशा बिगड़ जाएगी। यह नुकता है। सुनते हो मस्ताने। विषय विकार और अभ्यास का आपस में बैर है। मैं यह नहीं कहता कि तुम स्त्रियों को छोड़ दो परन्तु अधिक विषय मत कमाओ।

जहां काम तहां नाम नहीं जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊ न मिलें एक ठौर इक याम॥

यह असूल की बात है जब संसार से सम्बन्ध कम करोगे और शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य रखोगे तब तुम्हारे अन्तर में प्रकाश और शब्द खुलेगा। इसलिए स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि धन स्त्री और सम्पत्ति को प्रारब्ध पर छोड़कर मौज पर रहो। गुरु लोग अपनी गद्दियों को बढ़ाने के लिए सबको नाम दान दे रहे हैं। मैं किसी को नाम नहीं देता। मैंने अपने लड़के को नाम नहीं दिया लोग उसकी बहुत प्रशंसा करते हैं कि वह बहुत उच्च चरित्र वाला व्यक्ति है। कबीर साहिब ने धर्मदास की ३० वर्ष तक परीक्षा करने के पश्चात नाम दिया था और आजकल प्रातः की गाड़ी जाओ और नाम ले कर सायं की गाड़ी घर वापस आ जाओ।

तू है सिंध अगाध गंभीरा, लहर विष्णु अज त्रिपुरारी।
धन्य धन्य तू धन्य धन्य है, धन धन तू जगदा धारी॥

तुम स्वयं अपने आप में पूर्ण हो। सारे खेल तुम्हारे ही अन्तर से उठते हैं। जिनको अपने रूप का ज्ञान हो जाता है उनको फिर कहीं जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

सबका प्यारा एक प्रीतम, घट घट का तू नितवासी।

वह मालिक तो वहां रहता है और उसकी किरण सुरत रूप में हमारे अन्तर रहती है और वह हम हैं। हम सब अपने आप को भूल गए। गुरु मिला तो उसने असलियत बताई। अपने आप को जानने का प्रयत्न करो, साधन करो और अपने आप को अकेला करो फिर कोई बन्धन नहीं।

आनन्द मंगल रूप है तेरा, आनन्दमय आनन्द रासी

भटनागर साहिब ! मैं चाहता हूं कि तुम को समझ आ जाए और मेरा यहां आना छूट जाए मैं तुम लोगों को यह दौलत देना चाहता हूं। बात को समझो। जो कुछ है वह सब तुम्हारे अन्तर में है।

सहस कमल में जोति निरंजन त्रिकुटी पद का ओंकारा।

तुम्हारे अन्तर में यह सुरत जब प्रकाश में आ जाती है तो आत्मा बन जाती है और नीचे आ कर वही शरीर बन जाती है। तुम ही जीव हो, तुम ही ब्रह्म हो, तुम ही परम हंस हो, तुम ही सन्त हो और तुम ही परम सन्त हो। तुम हो तो एक लेकिन कभी लोभी; कभी कामी, कभी भक्त, कभी

सन्त सब कुछ तुम ही हो। अज्ञान में आ कर मन के चक्कर में फंस जाते हो और अपने मार्ग से भटक जाते हो। जो व्यक्ति पूरे गुरु के बिना अभ्यास करते हैं वह पागल हो जाते हैं।

सुन्न महासुन्न पारब्रह्म तू भंवर गुफा सोहंग सारा॥

तुम्हारी नाना प्रकार की अवस्थाएं हैं। सुरत का जिससे सम्बन्ध होता है वह उसी का रूप हो जाती है। संसार में रहते हुए और सारे काम करते हुए किसी काम में न फंसना ही अपने आप को जानना है। आप लोगों के अनुभवों से मेरी आंख खुल गई। मैं सत्य प्रिय व्यक्ति हूं यदि मैं स्वार्थी होता तो मेरे पास भी कारें होतीं और मेरे साथ भी चेले होते।

एक बार बाबा जगतसिंह जी होशियारपुर में मेरे पास आटे की चक्की पर जहां मैं काम करता था, आए। वह एक उच्चकोटि के महापुरुष थे। बातचीत होती रही। मैंने कहा कि क्या सन्त वही है जिसके पास कारें और जिसके दरवाजे पर पहरेदार हों। सन्त तो एक सिपाही भी हो सकता है, एक दुकानदार भी हो सकता है और एक भंगी

भी हो सकता है। यह तो एक अवस्था है जिसको प्राप्त हो गई, हो गई। ऐसे ही देहरादून में सन्त कृपालसिंह जी से मैंने कहा था कि यह जो हमको गद्दियां मिली हैं यह हमारे पिछले जन्म के कर्मों के कारण मिली हैं। कई आदमियों को नेकी के बदले वदी मिलती है लेकिन मैं करता कराता भी कुछ नहीं फिर भी मुझे इतना यश मिल रहा है कि जिसका कोई अनुमान नहीं।

सत्त लोक का सत्त पुरुष तू अलख अगम का करतारा

तुम ही परम तत्व हो। वही किरण यहां पृथ्वी पर आ कर कहीं कुछ और कहीं कुछ बन गई। राधास्वामी मत की नाम माला पढ़ो उसमें लिखा है कि तुम स्वयं मालिक की अंश हो किसलिए अपने आप को भूल कर संसार में आसक्त हो गए और माया के बस में आ कर अपने आप को भूल गए।

राधास्वामी धाम में राधास्वामी सुरत शब्द का भण्डारा।

जब सुरत वापिस अपने धाम में चली जाती है तो वही राधास्वामी है और यह ही विज्ञान कहता

है कि Light and sound से सब कुछ बनता है और उसी में समा जाता है। मैं भी इसी परिणाम पर आया हूं कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। बुलबुला टूटेगा और सागर में मिल जाएग। यदि अन्त समय पर मुझे यह ज्ञान रह गया तो मेरा बेड़ा पार है।

तेरी सेवा तेरी पूजा तेरा सुमिरन ध्यान रहे।

यह सब अपनी ही पूजा है। रूप प्रकट हुआ यह सब तुम्हारी अपनी ही पूजा है। अन्तर में जो रूप प्रकट होता है वह तुम्हारा अपना ही मन होता है। तुम भ्रम में आ कर लूटे जा रहे हो। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता। जो भी उठा उसने संसार को लूटा। बात सच्चो कह रहा हूं।

राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, तेरा ज्ञान हर आन रहे

राधास्वामी के चरण हैं प्रकाश और वही हिन्दुओं में सावित्री है, मुसलमानों में वही नूर है और इसी विचार से पारसी आगकी पूजा करते हैं। सब जगह प्रकाश है उसको पकड़ो तब बेड़ा पार होगा। हिन्दुओं में अन्त समय पर प्राणी को ज्योति इसलिए दिखाई जाती है ताकि उसको यह

याद आ जाए कि मेरा असली रूप प्रकाश है। आजकल यह एक रीति रिवाज रह गया है, असलियत का किसी को पता नहीं है और न ही कोई बताने वाला है। अपना कर्तव्य पूरा करो जिस ने मरना है उसने मर जाना है। अब मामचन्द मर गया। मेरे भाई की मृत्यु हुई और सन्त कृपाल सिंह जी महाराज चोला छोड़ गए, मुझे सोचने का समय मिला है।

आप लोगों को सच्चाई वर्णन कर दी। सच्चाई का आदर वह करता है जिसने व्यय किया हो इसलिए सन्तों के मार्ग में बलिदान की आवश्यकता है। मुफ़ती मुफती ही रहता है काजी नहीं बन सकता। बात को समझो। "गुरु वाक्यं मूल मन्त्ररम्।"

"वाणी गुरु गुरु है वाणी, वाणी अमृत सारे"

गुरु गुरु करने से तुमको एक सहारा मिलेगा जैसे बच्चे को मां का सहारा मिलता है। यह भी धन्य है जब बच्चा आरम्भ में स्कूल जाता है वह तख्ती स्लैट और कागज का सहारा लेता है परन्तु यदि सारा जीवन यही सहारा लेता रहेगा तो वह

विद्वान नहीं बन सकता। इसलिए मैं किसी का खण्डन नहीं करता। अपने स्थान पर और अपनी अपनी श्रेणी पर सब ठीक हैं परन्तु मेरा सत्संग केवल अभ्यासियों के लिए है।

सबको राधास्वामी

गूढ आध्यात्मिक विचार

जो सन्त पदम धाम (निज स्वरूप) में रहता है, उसका दर्शन जो व्यक्ति करेगा अथवा उसका ध्यान करेगा, उस सन्त के गुण उस व्यक्ति के अन्दर आ जाएंगे। पदम धाम क्या है ? पदम एक फूल है जो पानी में रहता है किन्तु पानी चाहे कितना ही हो जाए उसमें डूबता नहीं। सदा पानी से ऊपर रहता है। मैं अपने आप में रहता हूं। मुझे किसी से आसक्ति नहीं। इसलिए मैं पदम हो गया। यह पदम का भाव है।

सार का सार प्रथम भाग

सूचना

अनुभव सार नामी पुस्तक जो कि श्री कुबेर नाथ श्री वास्तव ऐडवोकेट, रसड़ा ने लिखी है और मानवता मन्दिर की तरफ से प्रकाशित हुई है। बिना मूल्य सैक्रेटरी 'मानवता मन्दिर' से मिल सकती है। पुस्तक पढ़ने के बाद यदि कोई सज्जन चाहे, तो मानवता मन्दिर की अपनी इच्छानुसार दान के रूप में सहायता कर सकता है। यदि पुस्तक पसन्द न आए तो पढ़ने के बाद मन्दिर को लौटाई भीजा सकतो है।

सैक्रेटरी,
मानवता मन्दिर,
होशियारपुर,

मेरा दौरा

राधास्वामी ! मित्रो ! भाईयो !! और मिलने वालो !!! अपनी आयु के ८८ वें वर्ष में जा रहा हूं और जीवन की यात्रा का दौरा कर रहा हूं आयु के गुजारने के बाद अब यह अनुभव हो रहा है कि मैंने जीवन में जो कुछ किया वह मेरे मस्तिष्क का एक दौरा था। इस दौरे का दूसरा नाम है सनक अर्थात् एक प्रकार का जुनून। मनुष्य जगत में आता है, किसी वासना और इच्छा के अधीन काम करता है, परिश्रम करता है और दौड़धूप करता है। यह सब है क्या ? जुनून ही तो है। इसका परिणाम क्या होता है ? इस संसार से खाली हाथ चला जाता है।

मैं सात वर्ष का था तो विचार आता था कि मेरा स्वामी कौन है। इस सिलसिले में धार्मिक जगत के प्रभाव अन्तःकरण पर गहरे अंकित हुए। मैंने मूर्ति पुजा की, 'भक्तमाल' पढ़ी, भक्त बना, फिर हजूर दाता दयाल शिवव्रत लाल जी महाराज

की शरण में आया और सुरत-शब्द-योग की शिक्षा मिली। अभ्यास के जुनून में आया। प्रकाश और शब्द प्रकट हुए, आनन्द और खुशी ली।

अब अन्त समय निकट है सोचता हूं कि शब्द-योग से या धार्मिक जगत में विचरण करने से ऐ फकीर ! तुम को क्या मिला ? यह मेरा ही जजबा था कि इस मार्ग पर चलूंगा और जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊंगा। अपनी इस वासना के आधीन और कर्म भोग के कारण दौरे पर आ रहा हूं और साथ ही यह भी सोचता हूं कि क्या तेरे इस दौरे का कोई और अभिप्राय भी है। मित्रो ! मैं सत्यप्रिय इन्सान हूं मेरे इस दौरे का और अभिप्राय भी है। अपनी वासना के अनुसार और हजूर दाता दनाल जी की इस आज्ञा का पालन करने में कि फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना' के अन्तर्गत मैं अपने अच्छे या बुरे कर्मों के कारण मानवता मन्दिर बना बैठा। इसलिए कुछ यह भी लालच है कि मन्दिर में चार पैसे आ जाएं, यहां दुखियों की सेवा करता हूं, हस्पताल है और प्रकाशन का कार्य भी है इसलिए मेरा प्रोग्राम निम्नलिखित है किन्तु यह भी मेरे स्वास्थ्य या

मालिक की मौज पर आश्रित है।

दौरे के समय मेरे साथ श्री भूपसिंह, श्रीमती भण्डार देवी और श्री ग्रोवर साहिब (स्व० श्री मामचन्द की जगह होंगे। सम्भव है एक दो सज्जन और भी हो जाएं।

नोट :---मेरी आयु का ध्यान रखते हुए मेरे सत्संग में वह सज्जन आएं जो अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं या परमार्थ और सच्चाई के इच्छुक हैं। खेल या एक आदत के विचार से न आएं। मैंने यह काम अपनी नियत से दुखी अशान्त, संशय और भ्रम में आए हुए लोगों की शान्ति के लिए किया है।

प्रोग्राम हजूर परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज

थस्प्रान			पहुंच			
दिनांक	स्थान	समय	गाड़ी नं.	स्थान	समय	दिनांक
८-२-७५	होशियारपुर	१३-३५	५ जे-एच अप	जालन्धर सिटी	१४-५०	—
,,	जालन्धर सिटी	२१-४२	३४ डौन	दिल्ली	५ बजे प्रातः	९-२-७५
९-२-७५	नई दिल्ली	२०-५०	२२ ,,	नागपुर	१७-३५	१०-२-७५

(१०-२-७५ से १४-२-७५ तक भिलाई में विश्राम)

१४-२-७५	दुर्ग	६-५	३० डौन	नागपूर	१२-२०	१४-२-७५
,,	नागपुर	१७-५५	२२ ,,	काज़ी पेट	२-३५	१५-२-७५

(१५-२-७५ से २१-२-७५ तक हनमकोन्डा, करीम नगर, सिकन्दरावाद इत्यादि)

२१-२-७५	सिकन्दरावाद	२०-४०	३२ डौन	बम्बई	१३ ४५	२२-२-७५
२६-२-७५	बम्बई सैंट्रल	१९-१०	३ अप फ्रन्टियरमेल	नागदा	७-३०	२७-२-७५

(२७-२-७५ से ३-३-७५ तक म० प्र०, तराना, उज्जैन तथा इन्दौर इत्यादि)

३-३-७५	इन्दौर	१४-३५	३३ अप	भोपाल	२१-४५	३-३-७५
५-३-७५	भोपाल	१२-४५	५८ डौन	इटार्सी	१४-४५	५-३-७५
७-३-७५	इटार्सी	१-१०	३३ अप	कटनी	९-००	७-३-७५
९-३-७५	कटनी	२०-३०	३८९ अप	इलाहाबाद	६-३०	१०-३-७५

१०-३-७५ (धाम को सड़क द्वारा प्रस्थान)

(१०-३-७५ से १४-३-७५ तक राधास्वामी धाम के आस पास स्थानों में)

१४ ३-७५	मुगलसराय	१३-००	११ अप	कानपुर	२०-१५	१४-३-७५

(१५-३-७५ से २५-३-७५ सीतापुर, मिसरिख, अलोगढ़, विलारी तथा दिल्ली)

२५-३-७५	दिल्ली	२१-५५	३३ अप	होशियारपुर	६-३३	२६-३-७५

सूचना

(१)

मानव मन्दिर का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। क्यों ? मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। मैंने जो कुछ समझा और अनुभव किया वह किसी धर्म या पन्थ के धर्मग्रन्थों से नहीं लिया। यह मेरा निज अनुभव है। क्योंकि निज अनुभव का नाम ही ज्ञान है, मैं अपने ज्ञान को बेचता नहीं। तुलसीदास जी ने रामायण में भरत की जबानी यह ख्याल जाहर किया है कि ब्राह्मण के लिए वेद का बेचना महान पाप है। वेद नाम है ज्ञान का। इस पत्रिका के पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं यह हाथ जोड़ कर पढ़ने वालों से प्रार्थना करूंगा कि अगर किसी की इसके पढ़ने में रुचि न हो और जीवन को नियम-बद्ध बनाने की जरूरत न हो या इन मेरे विचारों से

किसी को सन्तुष्टि, उत्साह, खुशी और शान्ति न मिलती हो तो वह मानव मन्दिर को न मंगवाए और जो मंगवा रहे हैं अगर वह लिख दें तो हम न भेजें। अगर कोई यह समझता है कि मेरे इस काम से किसी को फायदा पहुंचता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करे ताकि यह काम जारी रखा जाय।

पत्र व्यवहार में मानव मन्दिर का क्रमाँक नं. जरूर दिया करें। फकीर

(२)

हजूर परम सन्त परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज का आगामी मासिक सत्संग १९ जनवरी सन १९७५ इसवी इतवार के दिन मानवता मन्दिर, सुतहरी रोड़; होशियारपुर में प्रातः ८ बजे से १० बजे तक होगा।

Regd. No. 26265/74.
MANAV MANDIR P—Hsp—7.

ADDRESS

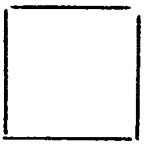

To

_____

_____

_____

_____

From :

MANAVTA MANDIR,
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.